ल्याओ प्यार करो दीदार

मूल मिलावे में सभी सखियां परस्पर अंग से अंग लगा कर बैठी हैं। है तो सभी की नज़र खेल में-खेल भी एक है - परन्तु सभी इस खेल के भीतर ही अलग-अलग प्रकार का खेल देख रही हैं। पारब्रह्म की १२००० रूहों को सम्पूर्ण माया दिखलानी है इसलिए सभी को माया के अलग-अलग रंग दिखलायें हैं। यही कारण है कि रूहें अलग-अलग प्रदेशों-वर्णो तथा कुटुम्ब-कबीलों में उतरी हैं। खिलवत-परिकरमा-सागर-सिनगार की वाणी से राजजी ने अपनी रूहों के लिए अर्श-अजीम का दरवाजा खोल दिया है और स्पष्ट कह दिया है 'प्रेम बिना सुख पार को नाही' और इन्द्रावती के धाम दिल में विराजमान पुकार-पुकार कर अपनी अंगनाओं को सारी हकीकत बतला रहे हैं - कि अपने वतन से तुम इश्क की शर्त लगाकर आई हो कि हम संख्या में अधिक है इसलिए स्वाभाविक रूप से हमारा इश्क आप से बड़ा है - धनी सौ बार आज़मा कर देख लो। अब राज जी अपनी अंगनाओं को उसी शर्त की याद दिलाते हुए कह रहे हैं 'कि अब कहां है तुम्हारा इश्क? लाओ प्यार और मेरा दीदार कर लो! अब रूहें इस खेल में अपना तनिक भी बल न चलने की बात कर रही हैं तो धनी कहते हैं कि तुम शर्त लगाकर आई हो इसलिए मैं इस खेल में तुम्हारा तसीहा ले रहा हूँ - वरना मैं तो सेहेरग से भी निकट हूँ न कोई दरवाजा है, न कोई ताला है और न ही चाबी है - जिस से कुछ खोलना है।

'यों हके छिपाईयां खेल में, दे इलम करी खबरदार।
रबद किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार।।"

प्रक० २५/३ सिनगार

प्यारे सुन्दरसाथ जी - यह एक ऐसा खेल है जिसमें १२००० रूहें धनी के हुकम से अपना-अपना रोल अदा कर रही हैं। धनी हमारे सेहेरग से भी निकट हैं - वाणी के द्वारा प्रेम के पूर के पूर बह रहे है - फिर भी १२००० सखियों में से किसी ने तो बिल्कुल कम-किसी ने अधिक और किसी-किसी ने तो रोम-रोम में धनी के प्रेम को बसा लिया है। सूत कातने का उदाहरण देकर अर्शे अजीम से उतरी हुई उमत की दुर्दशा धनी ने बताई है - क्योंकि सभी सखियां अपने धनी से शर्त लगा कर आई हैं - कि खेल कैसा भी हो जीत हमारी ही होगी - राजजी की कूव्वत को जानती नहीं थीं - इसलिए अपने इश्क का बल बता रही थीं। रूहें बेनियाज थीं - क्या जाने? कि यह खेल तो धनी के हुकम के भीतर देखना है - यहां राज जी को याद भी उनके हुकम से करना है - लगभग सभी सखियों के दिलों को वाणी के सन्देशें झकझोर कर इस स्वप्न से जगा कर कह रहे हैं - कि याद करो अपने वतन के अखण्ड सुख-जब धाम के सुखों की तरंगें तुम्हें उन्हीं सुखों

Nijanand App

के दरम्यान रहने के लिए बेचैन कर देंगी - तब तुम्हारा सपने का संग छूट जायेगा। इसलिए मैं बार-बार तुम्हें उन सुखों की याद दिलाता हूँ। सूत कातने का उदाहरण देकर धनी ने समझाया है कि यह संसार चाहे कुछ भी करे तुम तो अपने पिया के प्रेम का बारीक से बारीक सूत कातो। यदि मेरा दीदार चाहते हो तो सूत कातते हुए अपनी सुरता को सूत की तांत से तनिक भी हटाना नहीं है। परन्तु कुछ सखियां अपना-अपना सूत कातने की अपेक्षा दूसरों के तकले तोड़ने में लगी हैं। यदि किसी सखी ने धनी के प्यार का अधिक सूत कात भी लिया है तो वह अपने सूत का गुमान लेकर सिर ऊंचा किये बैठी है कि हमारे अतिरिक्त राज जी के दिल के गहरे भेद कौन जान सकता है? यही तो अचरज का विषय है सुन्दरसाथ जी कि खेल की असल समझ जाने पर भी कुछ सखियां स्वयं को सुन्दरसाथ से जुदा समझने की भूल कर रही हैं।

परन्तु कुछ थोड़ी सी सखियां ऐसी भी हैं - जिन का चित्त सूत की तांत के साथ बंधा है - इनके हाथ से धनी के प्यार की पूनी कभी नहीं छूटती। सूत की तांत के साथ अपनी सुरता को बांधें हुए ये सखियां निरन्तर अपने पिया के प्यार का बारीक सूत कात रही हैं। यही नहीं ये सखियां रातों को भी जागकर अपने सोहाग का सूत कातने से नहीं कतराती क्योंकि इन्हें पिया के साथ किये हुए वायदे एक क्षण के लिए भी माया में विश्राम नहीं लेने देते। सूत कातने की मिसाल दे कर धनी ने हम रूहों को यही तो समझाया है कि मेरे ही बल से तुम थोड़ा अथवा अधिक तथा इतना अधिक सूत भी कातोगी कि हार मान कर मुझे तुम्हारे सामने आना पड़ेगा। क्योंकि यह खेल है - इस खेल में हार जीत के अनुसार परमधाम में हांसी होनी है - कम से कम और अधिक से अधिक दिखलाने का यही अवसर जान कर धनी ने अपनी अंगनाओं से इश्क की शर्त लगाई है।

'एक फेरे चरखा उतावला, दिल बांध तांत के साथ।
रातों भी करे उजागरा, सूत होवे तिन के हाथ।।'

प्रक० १६/२५ प्र०हि०

अब प्रश्न यह उठता है सुन्दरसाथ जी - कि सूत कातने का अर्थ क्या है - यही नहीं बारीक से बारीक कातना है और सेर भर कातना है। जीव और तन के परदे से बाहर आ कर आतम के दिल में इश्क उपजाने से ही हमारी सेर भर सूत कातने की शर्त पूरी हो सकती है। यह तन ही तो परदा है - जो धनी की याद में सदा आड़े आ जाता है - इसीलिए परमधाम के सुखों का स्मरण करते हुए इस तन पर भी निगाह रखनी है इसलिए कहा कि सुरता को सदा युगल स्वरूप के चरणों में ही रखना है - सुरता को अखण्ड में साधने का उपाय करते रहने से ही धीरे-धीरे आतम के दिल में इश्क उपजेगा - और अपने प्रयास को आत्म निरीक्षक की निगाह से आलोचक बन कर देखते रहो कि कितना प्रेम आया है। इश्क का जोश बढ़ते-बढ़ते धीरे-धीरे तन के परदे को गोरा कर देगा तो आतम जो परआतम की सुरता है - इस झूठे तन को छोड़कर अपने असल तन को साक्षात

Nijanand App

देखेगी। सार की बात तो यह है साथ जी-कि हमारा आत्म निवेदन भी तभी आरम्भ होता है जब आतम को अपना असल तन साक्षात दिखाई दे। जैसा कि वाणी में श्री जी ने फ़रमाया है 'आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, तब भयो आतम निवेदं' इससे पहले तो हम अपने झूठे मोह-पाश में बंधे हैं, यही कारण है - कि हम इस तन के सुखों में डूबे हैं।

"जो लो इस्क न आईया, तो लो करो उपाय।
यों ही इस्क जोस आवसी, तो देसी पट उड़ाय।।"

प्रक० ४/१० परिकरमा

और उपाय क्या करने हैं - सर्वप्रथम तो सुरता को मूल-मिलावे में सदा युगल स्वरूप के चरणों में रखना है क्योंकि युगल स्वरूप की शोभा को निरन्तर निरखते रहने से आतम के अन्तस्करण में जो प्रेम उपजेगा वह परआतम को निरन्तर पोहोंचते रहने से आतम को फ़रामोशी से धीरे-धीरे जाग्रत करता जायेगा। आतम के फ़रामोशी से जाग्रत होने पर इस तन से झूठे सुखों का मोह छूटता जायेगा और जब इस तन से सम्बन्धित सुखों को प्राथमिकता नहीं मिलेगी तो सच्चे सुखों में दिल रमने लगेगा - सच्चे सुख ही आतम के दिल में इश्क उपजाने का कारण हैं - सुरता को सदा मूल मिलावे में रखने के लिए चितवनी में बैठना भी आवश्यक है - क्योंकि एकान्त में चित्त की स्थिरता से प्रेम रस निरन्तर प्राप्त होते रहने से इश्क का जोश इस तन के परदे से आतम के अंगों में बढ़ता जायेगा। यदि युगल स्वरूप की छवि अन्तस्करण में बस जाये और अन्तस्करण के द्वारा रोम-रोम में समा जाये तो क्या आतम के दिल में धनी का विरह नहीं आयेगा और जब विरह आ गया तो प्रेम-इश्क उपजाने में भी देर नहीं लगेगी - प्रेम-इश्क से ही धनी का दीदार होता है - यही वाणी कह रही है लाल दास जी की 'बड़ी बृत' में धनी ने स्वयं फ़रमाया है - कि जिस प्रकार मैं केवल अपने अंग मोमनों से ही प्रेम करता हूँ - उसी प्रकार तुम भी केवल मुझ से प्रेम करो और मेरी तरह सभी चिन्ताएं छोड़कर केवल मुझे याद करो तो मैं तो तुम्हारी ही बाट देख रहा हूँ। मुझे केवल एक ही फ़िकर है - कि मेरी रूहें कहीं माया में न डूब जायें।

'मेरी ज़िकर तुम करो, मैं करों तुम्हारी जिकर।
मैं राह देखत तुमारी, मोकों और नाहीं फिकर।।'

प्रक० ६/१६ लाल दास जी की बड़ बृत

और सुन्दरसाथ जी - आतम के दिल में इश्क उपजाने के लिए युगल-स्वरूप के चरणों से सुरता को नहीं हटाना है क्योंकि ये चरण ही रूह के जीव का जीवन हैं। आतम से राज जी की असल निसबत होने के कारण ही धनी ने इस दिल में चरण धरे हैं। इन चरणों की बदौलत ही आतम को परमधाम की सुगन्ध मिलना आरम्भ होती है परन्तु जब तक आतम दृष्टि खुलती नहीं ये चरण दिल में चुभते नहीं - धनी का इश्क बढ़ाने के साथ-साथ ही रूह का इन चरणों से प्यार बढ़ता

Nijanand App

है - धनी का इश्क ही इन चरणों को नैनों की पुतली में छिपा कर रखने को प्रेरित करता है। इसी इश्क के कारण ही आतम इन चरणों को अपने शीश पर चढ़ाकर धाम की गलियों में घूमती है तो कभी गले का हार बना कर रखती है यहां तक कि मोमनों का रोज़ा-जकात-तीर्थ सब राज जी के चरण ही है। इन चरणों की बरकत से जब आतम अपने असल तन का साक्षात्कार कर सकती है तो धनी का दीदार सुरता से क्यों नहीं कर सकती ?

केवल ब्रह्मसृष्टि ही प्रेम की पात्र है - इसीलिए 'इश्क' शब्द उसी की खातिर सर्वप्रथम कुरान में लाया गया। अब पारब्रह्म स्वयं इश्क का खजाना बेशक इलम में छिपा कर लाये हैं - परन्तु इश्क के बिना तो इलम हमारे अर्न्तमन को छू भी नहीं सकता और यही इश्क-इलम के द्वारा जब आतम के दिल में आता है तो हमारी गुण-अंग-इन्द्रियां भी इश्क की हो जाती हैं - यही नहीं-यही इश्क बढ़ते-बढ़ते रूह के रोम-रोम में बस जाता है। जिस रूह के रोम-रोम में पारब्रह्म का इश्क बस गया हो-वह तो संसार की ओर से अन्धा-बहरा और गूंगा ही हो गया। फिर वह इश्क की बात लब पर लायेगा कैसे? इसीलिए वाणी में धनी ने स्वयं फ़रमाया हे - कि इश्क शब्दों में आता ही नहीं तो जुबां या लेखनी से इस का इज़हार कैसे किया जा सकता है? अनेकों ने धनी का दीदार इस स्वप्न के तन से पाया तो सही-परन्तु इस जुबां से कुछ भी न कह सके 'जिन पाया तिन माहें समाया' हां-उन परमहंसों ने अपनी आंखों के हाव-भाव से सब कुछ कह दिया यही नहीं उन के रोम-रोम में बसे धनी की सुगन्ध उन के समीप रहने वाले सुन्दरसाथ को उन की रहनी से भी मिली।

"क्यों कहूं सुख मोमन के, इन जिमी बैठ के देखत।"
अर्श की गलियों में फिरें, जाकी हक करत सिफ़त।।

बड़ी ब्रत - २६/७६

यद्यपि इस वाणी से लगभग सभी सुन्दरसाथ ने इस के सार से अखण्ड-सुख पाये। सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते चिन्तन-मनन राज जी का इस वाणी ने ही दिया-आठों प्रहर के अर्श के सुखों की लज्जत भी सतगुरू की चर्चा और वाणी से सुन्दरसाथ को उपलब्ध होती है परन्तु युगल स्वरूप का दीदार पाने के लिए तो सागर की गहराई में गोता लगाना पड़ेगा। जब तक अर्न्तमुखी होकर एकान्त में सुरता को हम साधना आरम्भ नहीं करेंगें तब तक राज श्यामाजी के दीदार की हम कल्पना भी कैसे कर सकते हैं। हां कुछ थोड़े से सुन्दरसाथ अवश्य अपवाद स्वरूप है उन्हें धनी की मेंहर की छत्र छाया विशेष रूप से मिली-क्योंकि जागनी का कार्य उन्हीं से होना था।

शायद हम समस्त सुन्दरसाथ की यही समस्या है - कि चितवनी पर बैठने का अभ्यास करने के दौरान अंधेरे दिखाई देते हैं और हम हार मान कर चुपचाप बैठ जाते हैं। हम सभी जानते हैं कि परमधाम का कण-कण तिनके से लेकर पहाड़ तक सभी कुछ इश्क का स्वरूप है - राजजी से

Nijanand App

एक दिल, एक रस,एक चित्त हुए बिना तो उनका दीदार असम्भव है - क्यों कि वे हैं इश्क के धरातल पर और हम है माया के धरातल पर-माया की तरंगें इश्क की तरंगों को कैसे खीचेंगी? धीरे-धीरे सुरता को साधने से माया के परदे उड़ जायेंगे तो इश्क अवश्य आयेगा और आतम को परआतम साक्षात दिखाई देने लगेगी।

यदि हम स्वयं से प्रश्न करें कि चितवनी में बैठकर हम ने क्या खोया-क्या पाया? शायद यही उत्तर मिलेगा कि पाया ही पाया-खोया कुछ भी नहीं - क्योंकि हमारा उद्देश्य है - आनन्द लेना अपने वतन के सुख जब मिलने लगेंगे वो आनन्द की सीमा ही नहीं होगी और जब प्रतिदिन चितवनी करेंगें तो धनी से विलास की नई-नई सामग्री धनी स्वयं देंगें। फिर हम यह नहीं कह सकेंगें कि चितवनी किस की करें? चितवनी में अंधेरे दिखाई देते हैं। क्या हमने चितवनी में बैठ कर उन के एक-एक अंग की शोभा में गरक हुए पिया के तिरछे नैन जिन में आठों सागरों का रस समाया है-उन नैनों के अमीरस में स्नान किया? उनके होंठ जो रूहों से मीठी वानी बोलते हैं उसे आतम के कानों से सुना-उन की नासिका जो परमधाम की सुगन्धियों के सब तरह के रस लेती है - उसकी खुशबू को महसूस किया - इन सब अंगों में से यदि एक की शोभा में ही डूब जाते तो समय का अनुमान भी न रहता।

चितवनी में हम परमधाम के २५ पक्षों में से एक-एक की गहराई में डूब जायेगे तो समय पंख लगाकर उड़ जायेगा। जमुना जी की लहरों के साथ-साथ ऊपर-नीचे लहराते हुए सुन्दर स्वरूपों का बौछारों में भीगना-हौज कोसर ताल में धनी तथा सुन्दरसाथ के साथ ऊँची-ऊँची छलांगें लगाना-माणिक पहाड़ के झूलों में बैठ कर आकाश की ऊचाईयों को छूना-पशु-पक्षियों की मीठी वानी का आनन्द लेना यह सब सुरता से अनुभव में लेगें तो धनी स्वयं मेहर करके हमें दिखलायेंगे। सच तो यह है सुन्दरसाथ जी कि चितवनी जिसके लिए है-चित्त तो उसी ने खेचना है-हमारा काम तो केवल एकाग्र होकर सुरता को धनी की शोभा में लगाना है। जब धनी चित्त ही खेंच लेंगे तो शेष क्या बचेगा-यह मुर्दा तन-जो कुछ है ही नहीं।

"हक की खुदी आवही, तब फिरिये गलियां धाम।
हक हादी रूहों विहार, होए पूरे मनोरथ काम।
एक साधन, साधना हो वही, और न कोई उपाय।
सुपन आकार बैठ के, नूर पार विहार दिखाए।।"

प्रक०-३/७-८ बड़ी वृत

प्रणाम जी

कान्ता भगत, दिल्ली

Nijanand App